वसंत वैली

सितम्बर २०१३ पत्रिका

गांधी या *मोदी* ?

जैसे ही चुनाव की घड़ी पास आती जा रही है सभी संगठन जोर शोर से तैयारियाँ करने में लगे हुए हैं। एक तरफ काँग्रेस अपनी वाह वाही कर रही है तो दूसरी तरफ भाजपा काँग्रेस की बुराई करने से पहले एक बार भी नहीं सोचता। हर दिन कोई नया अभियान शुरू किया जाता है तो हर दिन एक नया भाषण दिया जाता है। इस सब के बीच में एक ऐसा प्रश्न उठता है कि इस देश की बागडोर कौन संभालेगा।

"मेरे लिए राजनीति महत्वाकांक्षा नहीं है... बल्कि एक मिशन है" - नरेंद्र मोदी

हमारा देश भ्रष्टाचार से लिप्त है और हर जगह या तो सड़कें टूटी पड़ी हैं। पुलिस वाले घूस लेने में लगे हुए हैं। इस झमेले के बीच में फँसा है वह आम आदमी जो कि अपनी आवाज़ नहीं उठा सकता है और यदि उठाता भी है तो इन भ्रष्ट राजनेताओं द्वारा दबा दिया जाता है। 2014 में होने वाले चुनाव में हमें केवल दो ही उपयुक्त भागीदार दिखतें हैं जिनमें से एक हैं नरेंद्र मोदी और दूसरे हैं राहुल गांधी। पिछले दस वर्ष से कांग्रेस का इस देश पर राज चल रहा है लेकिन न तो इस देश को न इस देश के लोगों को इनके इस राज से कोई फायदा हुआ है। उल्टा हर साल या तो किसी नए घपले का खुलासा हुआ है या हमारे देश की अर्थव्यवस्था को नुकसान पहुँचा है। आप अभी बढ़ते हुए रूपए के मूल्य को ही देख ली जिए और तो और सब्ज़ियों के गिरते दामों से पूरा देश परेशान है।

ऐसे में हमें दिखे भूतपूर्व प्रधान मंत्री के पुत्र राहुल गांधी। हम सभी को लगा था कि यह हमारे देश के लिए कुछ कर पाएँगे परंतु इन्होंने भी हमें निराश करने में कोई कमी नहीं छोड़ी। एक रैली में वे इतने क्रोधित हो उठे कि वे कागज़ फाड़ कर चिल्लाने लगे। उनके इस व्यवहार पर काफ़ी उंगलियाँ उठी थी। शिव सेना वालों ने गांधी को 'बच्चा और कच्चा' कहकर उनको अपमानित किया। उत्तर प्रदेश में हुए चुनाव में बुरी तरह हारने के बाद गांधी साहब ने तो अपना चेहरा ही छुपा लिया था। अब भी वे ईद का चांद बन कर हमें कभी कभी दिख ही जातें हैं लेकिन हम सभी ने अपनी उम्मीदें उन पर से हटा ही हैं। अब आते हैं आज कल के मीडिया के चहेते नरेंद्र मोदी पर।

मोदी जी जब से भाजपा की अभियान समिति के अध्यक्ष बनाए गए हैं तब से ही उन्होंने कोई कसर नहीं छोड़ी है भाजपा को बढ़ावा देने में और कांग्रेस को नीचा दिखाने में। हम सभी उनके द्वारा किए गए काम के बारे में जानते हैं और उनकी इस मेहनत का फल साफ साफ गुजरात के हर हिस्से में दिखता है। गुजरात के रहने वाले मोदी की बहुत इज्ज़त करते हैं और वे सब उनके काम से बेहद खुश हैं। लेकिन मोदी के भी अपने कुछ ऐसे दोष हैं जिन्हें भूलना मुश्किल ही नहीं असंभव है। 2002 में हुए गोधरा दंगों को आज तक कोई नहीं भूल पाया है। उस ही के दो वर्ष बाद इशरत जहां के फर्जी मुठभेड़ में फिर से मोदी के नाम और काम के खिलाफ आवाज़ उठी। गोधरा दंगों में मारे गए लोग ज़्यादातर मुसलमान थे। इन दोनों घटनाओं से हमें साफ पता चलता है कि मोदी एक गैर धर्मनिरपेक्ष नेता हैं। यहाँ तक कि उन्होंने एक रैली में मुसलमानों की तरफ से भेंट लेने से भी इन्कार कर दिया। जब आप चुनाव में खड़े होते हैं तो आपको सभी को अपने साथ लेकर आगे बढ़ना चाहिए। परंतु मोदी जी जो कर रहे हैं वह इसके बिल्कुल विपरीत है।उन्होंने देश के लोगों को विभिक्त कर दिया है।

इस वक्त इस देश का जो हाल है उसके हिसाब से हमें एक सख्त और निरंकुश नेता की ज़रूरत है जो कि देश को सही दिशा में ले जा सके और भारत को विश्व में अनेक ऊँचाइयों तक पहुँचा सके। ऐसे में मेरे लिए नरेंद्र मोदी ही सही विकल्प लगते हैं जो कि देश को सही दिशा दिखा सकते हैं और हमें उन्नति की राह पर ले जा सकते हैं।

काम्या यादव 9

स्कूल वॉच

इन्टरहाउस गणित प्रतियोगिता कक्षा 11

1। ग्रीन हाऊस 2। येल्लो हाऊस 3। ब्लू हाऊस
4। रेड हाऊस

अन्तरविद्यालय मलटीमीडिया प्रतियोगिता 12

1। स्प्रिन्गडेलस धौला कुआँ 2। वसन्त वैली स्कूल
3। वैलमस वोइस स्कूल

संस्कृत श्लोक वाचन प्रतियोगिता 7

1। प्रियम डैका 2। सुविया असद व कबीर सिंह
3। अभिजाई माहाजन व माहिन भरदवाज

हिन्दी दिवस

'हिन्दी हमारी राष्ट्र भाषा'- 14 सितम्बर 1948 को संविधान सभा ने हिन्दी को भारत की राज भाषा घोषित किया। सन् 1953 से पूरे भारत में 14 सितम्बर को हर साल 'हिन्दी दिवस' के रूप में मनाया जाने लगा। 'हिन्दी दिवस' द्वारा जनता में यह संदेश पहुँचाया जाता है कि राष्ट्र भाषा हिन्दी का प्रयोग पूरे भारत में होना चाहिए। इस दिन कई सरकारी सभाएँ हिन्दी को बढ़ावा देने की घोषणाएँ करती हैं तथा प्रण लेती हैं कि वे अपना सारा काम हिन्दी में करेंगी। इस तरह के कार्यक्रम देश के कोने - कोने में मनाए जाते हैं।

आज अधिकांश भारतीय अंग्रेज़ी के जाल में जकड़े हुए हैं। किसी भी भाषा का ज्ञान बुरा नहीं होता पर विदेशी भाषा को अपनी मातृभाषा का सम्मान नहीं दिया जा सकता। अत: यह आवश्यक है कि हिन्दी को प्रोत्साहन देने के लिए हिन्दी का प्रयोग जीवन के हर हिस्से में होना चाहिए। महात्मा गाँधी ने सही कहा था – 'कोई भी देश नकल करके बहुत ऊपर उठ सकता है पर महान् नहीं बन सकता। भारत की 80 प्रतिशत जनता गाँवों में रहती है और केवल हिन्दी बोलना जानती है। तो क्यों न आज हम सब हिन्दी दिवस के अवसर पर प्रण करें कि हम हर कोशिश करके हिन्दी भाषा को केवल भारत में ही नहीं विश्व में भी सम्मान दिलाएँगे।

अरमान आनन्द 10

श्री अशोक वाजपाई

1. आप एक प्रख्यात हिन्दी कवि, निबंन्धकार, आलोचक और एक कला प्रशासक है। क्या बचपन में आपका यही सपना था?
मैं बचपन से ही एक कवि बनना चाहता था। मगर जब मेरी रचनाँए मेरे जाने के बाद भी जीए, मैं सही माएने में कवि तब कहलाऊँगा।

2. आप मध्य प्रदेश के सांस्कृतिक और कला प्रशासक कैसे बने?
मेरे पिता और अध्यापक का स्वर्ण सपना था कि मैं पढ़ लिख कर प्रशासन सेवक बनूँ और बौधिक अंतर्दृष्टि प्राप्त करूँ। वही सपना पूरा करते करते में यहाँ पहुचा हूँ।

3. क्या इस अनुभव से आप के लेखन पर कोई प्रभाव पड़ा?
बौधिक समझ के साथ साथ इस पद ने मुझे सिखाया कि ऐसी कोई जगह नहीं जहाँ हम दूसरों की मदद नहीं कर सकते।

4. आप दोनों हिन्दी और अंग्रेज़ी में ही सहज है, तो आपने हिन्दी में लिखने का निर्णय क्यों लिया?
सच पूछों तो मैं नही मानता कि मेरी अंग्रेज़ी इतनी प्रभावशाली है। मैंने अंग्रेज़ी बोलते हुए अपना बचपन नही गुज़ारा है। मैं अंग्रेज़ी में सपने नही देखता। अंग्रेज़ी में अपने सारे भाव विचार नही प्रस्तुत कर सकता।

5. क्या आपको लगता हैं कि हिन्दी दिवस जैसा कार्यक्रम मनाने से हिन्दी को बढ़ावा मिलेगा या यह केवल एक जिम्मेदारी निभाने का तरीका है?
मेरे अनुसार हमें हिन्दी दिवस नही भारतीय भाषा दिवस मनाना चाहिए। भारत में विभिन्न भाषाओं और विभिन्न बोलियों के होने का उत्सव मनाना चाहिए।

6. आज की युवा पीढ़ी के लिए आप क्या सलाह देना चाहेंगें?
मैं आज के बच्चों को याद दिलाना चाहूँगा कि सपना देखे बिना वह हकीकत में नही बदल जाता। असली हुनर केवल तब है, जब कम से कम से ज़्यादा से ज़्यादा कर सके।

आस्था कामरा, 12

गंगा नदी की कहानी

हिमालय से निकलती हुई बहती मैं गंगा नदी हूँ। हज़ारो किलोमीटर का सफ़र करके में आगे बढ़ती रहती हूँ और अंत में थककर असीम सागर की गोद में कुछ विश्राम पाती हूँ। लोग मुझे अत्यंत पावन मानते हैं। कहा जाता है कि स्वर्गलोक से निकलकर शिव जी की जटाओं में मुझे स्थान मिला। हिमालय की पर्वत पर आज से हज़ारों वर्ष पूर्व घने जंगल थे। भाँतिभाँति की जड़ी बूटियाँ और वृक्षों से टकराकर में आगे बढ़ती थीं। तब मेरा जल स्वच्छ था। मैं भिन्न-भिन्न प्रांतों की यात्रा करते हुए बहती रहती थी। मैने बनते-बसते नगरो को देखा जैसे इलाहबाद, बनारस, कलकत्ता। बड़े-बड़े शहरों में आकर मैं शांत बहती हूँ। मेरे तट पर बसे नगरों के बदलते स्वरूप को देखकर मेरा हृदय रो पड़ता है। बढ़ती आबादी के कारण लोगों की आस्था भी समाप्त होती जा रही है। मेरे तटो पर घाट बनाए गए और अब हज़ारो की संख्या में लोग वहाँ स्नान करते हैं। मेरा जल अत्यंत दूषित हो गया है। वनो की कटाई से मेरे जल के साथ मिट्टी भी पहाड़ों से बह आती है।

अब कहीं घाट पर बैठकर कोई वस्त्र धोता है तो कहीं कारखानों का प्रदूषित कूड़ा मुझमे बहा देते है। कहीं मेरे जल को रोक लिया जाता है, कहीं मोड़ दिया जाता है। मुझे वे दिन याद आते हैं जब मेरे तट पर हरे-भरे जंगल घिरे रहते थे। पक्षियों को सुनकर मेरा मन खिल उठता था। तरह-तरह के पक्षी मेरा जल पीकर लंबी उड़ान भरते थे। जंगली जानवर मेरे तट पर आकर विश्राम करते और अपनी तृषा शांत करते थे। मुझे दुख होता है आज अपनी हालत पर कि काश आज-कल के नौजवान पीड़ी एक जुट होकर अपनी गंगा मईया को बचाने के लिए कुछ करे।

आरूषी भुटानी 7

बताओ मै कौन हूँ ?

1 दो लड़के दोनो एक रंग के। एक बिछड़ जाए तो दूसरा काम न आए।
2 पढ़ने मे लिखने मे दोनो मे मैं आता काम पैन नही कागज़ नही बताओ कया है मेरा नाम ।
3 ऐसी कौन सी चीज़ है जिसके न तो खाल है न ही पंख है न ही कोई आकार है और न ही हड्डी है। फिर भी उसके पास ऊगलियाँ और अंगूठा हैं।

शायरा मजिठिया व शायना कुमार 7

छन्दों की रंगभूमि

स्वतंत्रता हमारी नज़र में

आप के लिए स्वतंत्रता मेरे लिए स्वतंत्रता
अलग है अर्थ अलग है अंतरा।
मछली को न मिली आज़ादी खुले आसमान में
स्वतंत्र न हो पंछी सागर विशाल में।

स्वतंत्रता चाहिए भ्रष्टाचार से
लालच हटाना है सत्ता और संपत्ति की चाह से।
दूर भगाकर भ्रष्टाचार को संसार से
चल पड़ेगा देश प्रगति की राह पे।

भ्रम और अंधविश्वास से मिले आज़ादी हमें
निरक्षरता फिर दूर हो सब लायक बने।
स्वतंत्रता मिले अपनी निजी ज़रूरतें सहे
उपयोग ऐसे करें सक्षम सीमा में रहे।

स्वतंत्र तब होंगे जब सबको रोटी मिले
हर नागरिक के सिर के ऊपर टोपी खिले।
गरीबी से आज़ादी मिले यह है प्रथम
स्वतंत्र कहलाना तभी होगा हमारा कर्म।

दिविज चानना 8

भ्रष्टाचार का शिकार

एक पात्र है नाम जिसका भ्रष्टाचार
ज़मीर उसका है शुरू से कसार।
लालच उस का है असीमित
आत्मसम्मान उसको रखे न कोई कीमत।

यह पात्र है सबको लुभाता
मज़े करने के लिए सबको बुलाता।
आड़े यह आये एक मुखौटा
इसका तो हर काम ही खोटा।

भूत प्रेत और राक्षस हैं कहानियों में
डराएँ सबको बचपन और जवनियों में।
असली खलनायक है भ्रष्टाचार
ईमानदारी उसके सामने है लाचार।

ताज़ा खबर है कि यह पात्र है सर्वव्यापी
इसके लिए काई रिश्वत न है काफी।
इसके विरूध संघर्ष कर्तव्य है हमारा
मिलकर करें विनाश इसका है आज का नारा।

देविका वीर 8

मैं खामोश रहा

मैं खामोश रहा जब उन्होंने मजदूरों का दमन किया
क्योंकि मैं मजदूर नहीं था।
मैं खामोश रहा जब उन्होंने किसानो की ज़मीन छीनी
मैं बिलकुल नहीं बोला
क्योकि न मैं किसान था, न ही वो मेरी ज़मीन थी।
जब उन्होने महिलाओं के साथ बलत्कार किया
मैं खामोश रहा
क्योकि मैं महिला नहीं था,
न ही वो मेरे घर की महिलाएं थी।
जब उन्होंने आदिवासियों का कत्ल किया
मैं खामोश रहा क्योंकि मैं आदिवासी नहीं था।
जब उन्होंने अपने हक़ की आवाज़ बुलंद करने वाले को
जेल में ठूँसा और जुल्म ढाए
क्योंकि मैं उनमें नहीं था।
लेकिन जब वे मेरे पीछे आए तब बोलने के लिए
कोई नहीं था
क्योंकि न तो मैं किसान था,
न मजदूर, न महिला और न ही आदिवासी
मैं अकेला था।

मुईद असद 10

बेटियों का बाप

एक आदमी की तीन बेटियाँः थी।
बेटियाँ : पापा हमें एक चीज़ कबूल करनी है।
पापा : हाँ बोलो
पहली बेटी ः पापा मुझे किसी से प्यार हो गया है।
पापाः कैसे ?
पहली बेटी ः हम दोनों एक मैटरीमोनइल साइट पर मिले
दूसरी बेटी ः मुझे भी प्यार हो गया है।
पापाः कैसे ?
दूसरी बेटी ः हम दोनों फेसबुक पर मिले
तीसरी बेटी ः मैने भी प्यार किया
पापा ः कैसे ?
तीसरी बेटी ः हम दोनों स्काइप पर मिले पापा देर तक सोच कर बोलते हैं
पापा ः ठीक है फिर अपनी शादी टवीटर पर करना बच्चें ईबे पर खरीदना और जब मन भर जाए तो उन्हें ओ। एल। एक्स पर बेच देना।

अक्षत संसल 8

रूचिकर बातें

1 पृथ्वी ही एक ऐसा ग्रह हैं जिसका नाम भगवान के नाम के बाद नहीं रखा गया हैं।
2 चंद्रमा पृथ्वी के जुड़वाँ ग्रह "थीया" के टूटने के बाद बना था।
3 पृथ्वी शुक्र ग्रह से भी ज़्यादा चमकीला हैं और ब्रहमाण्ड का सबसे चमकीला ग्रह हैं।
4 इन्सानो ने अभी तक केवल दस प्रतिशत से भी कम सागरों की खोज की हैं।
5 गुरूत्वा कर्षण खिंचाव पृथ्वी की सतह पर अलग अलग होता हैं।
6 रेगिस्तान पूरी तरह से रेत से नहीं ढका हैं जबकि चट्टाने और कुछ कंकड़ भी हैं।
7 लगभग पछत्तर प्रतिशत जानवरों की प्रजाती अगली दो सौ वर्षा में खतम होने की स्थिति में होंगी।

विवान यागनिक 8

सितंबर में जन्मे कुछ प्रसिद्ध जन

नूरुद्दिन मुहम्मद सलीम जहाँगीर 9 सितंबर 1569 को पैदा हुए थे। अकबर के बेटे होने के नाते जहाँगीर 1605 में मुगल सल्तनत के राजा बने ।

दादा भाई नौरोजी 4 सितंबर 1825 को पैदा हुए थे। वे एक पारसी बौध्दिक शिक्षक व राजनीतिक और सामाजिक नेता थे। वेभारतीय कांग्रेस के संस्थापक भी थे।

सर्व पल्ली डॉ राधाकृष्णन 5 सितंबर 1888 को पैदा हुए थे। वे एक तत्त्वज्ञानी व राजनेता थे जो बाद में भारत के पहले उपाध्यक्ष और द्वितीय राष्ट्रपति बने। उनके जन्म दिवस को पूरे देश में शिक्षक दिवस के रूप में मनाया जाता है।

भगतसिंह 28 सितंबर 1907 को पैदा हुए थे। वे एक भारतीय समाजवादी थे जिन्होंने स्वतंत्रता आंदोलन में एक प्रभावशाली क्रांतिकारी भूमिका निभाई।

एम एस सुब्बा लक्ष्मी 16 सितंबर 1916 को पैदा हुई थी। वे शास्त्रीय कर्नाटक गायिका थी। वे भारत की पहली ऐसी गायिका थी जिसे 'भारतरत्न' मिला।

देवआनंद 26 सितंबर 1923 को पैदा हुए थे। वे एक प्रसिद्ध बॉलिवुड अभिनेता, लेखक, निर्देशक व निर्माता थे। उनकी मृत्यु पिछले साल हीहुई है।

लता मंगेशकर 28 सितंबर 1929 का पैदा हुई थी। वे भारत की कोयल के नाम से जानी जाती हैं। वे भारत की सर्व श्रेष्ठ गायिका हैं।

आशा भौंसले 8 सितंबर 1933 को पैदा हुई थी। वे एक प्रसिद्ध पार्श्वगायिका हैं तथा लता मंगेश्कर की छोटी बहन हैं।

ऋषभ चैटर्जी 10

सत्याग्रह - भारत की माँग

राजनीति पर आधारित यह चलचित्र हिन्दी सिनेमा में छा गया है। सत्याग्रह हमारी सरकार की खामियों को अदभुत तरह से उजागर करती है। भ्रष्टाचार का विषय चलचित्र के दौरान दर्शकों बाँधे रखता है। और अनसुने तथ्य उभारकर हमें आश्चर्यचकित कर देता हैं। निर्देशक 'प्रकाश झा' तात्कालिक स्थितियों से प्रेरित हुए और इस कारण उन्होंने भारत के वासियों के लिए देश भक्ति जागृत करने वाला यह विषय चुना।

सत्याग्रह एक सेवानिवृत्त अध्यापक द्वारका आनन्द के सामाजिक अभियान पर आधारित कथा है। द्वारका आनन्द व उनके साथी सरकार की कानून तथा न्याय प्रणाली को लेकर व्यथा में हैं क्योंकि वृद्ध्ध अध्यापक के निरीह बेटे ने भारतीय सरकार के हाथों अन्यायपूर्ण तरीके से मृत्यु प्राप्त की। सत्याग्रह सार्वजनिक मीडिया के साधन से देश में परिवर्तन के लिए अनुरोध करता है। यह चलचित्र लोकतंत्र के प्रत्येक लक्षण पर रोशनी डालता है और भारत के आम आदमी को भ्रष्टाचार रहित समाज की आशा देता है। क्रांति व अन्याय के विरोध में आवाज़ उठाना हमारा अधिकार है। और अंत में जीत सच्चाई व न्याय की होती है।

सरीना नन्दा 10

आई फौन 5 एस

सितम्बर में एक नया आई फौन निकल रहा है 'आई फौन 5 एस' जो ऑपल कंपनी ने बनाया है। यह फौन पहले आए आई फौन के जैसे नही है और इसमे अब और बेहतरीन चीज़ आ चुकी है।

पहले से उसका डाईमेनशन्स बढ़ गई है 123|8 & 58|6 & 7|6 और उसका वजन कम हो गया है 112 ग्राम। फिर पहले से उसका स्क्रीन बड़ा हो गया है जिसमे है एल. इ. डी. और बैक लिट आई. पी. एस. और कैपेसिटिव टच स्क्रीन। स्क्रीन का साईज़ भी बढ गया है। 640 1136 पिकसलस। अब इसमे बहुत से नए फीचरस आए है जैसे 4 इंच रैटीना डिस्प्ले और अलटरा फास्त वायरलैस और नया अे 6 चिप जो सब मोबाईल से ज्यादा तेज़ चलता है। नए ईअर फोनस जो कान के लिए बिलकुल ठीक है और नया आई साईट कैमरा जो दुनिया का सबसे मशूर कैमरा है और इसमे अब पैनोरामा भी है जो सब कुछ एक में ही कैपचर कर लेता है और और सबसे नया लाईटनिंग कनैक्टर जो पहले से भी ज़्यादा तेज़ चलता है और नया मापस जो अब 3 डी में भी दिखाता है और सिरी जो आपकी हर बात माने और अंत में आई ओ एस 7 जो दुनिया का सबसे बेहतरीन ओपरेटिंग सिस्टम है। अम्त मै मे कहना चाहता हूँ कि जो यह नया आई फोन आ रहा है वह पूरी दुनिया को हिला देगा और यह सबसे बहतरीन होगा।

कन्हव उप्पल 8

हिन्दी

हिन्दी कितनी न्यारी,
सब बच्चों को लगती प्यारी
यह है भारत की शान,
और है भारत का सम्मान।
हिन्दी हमारी मातृ भाषा है,
जिसमे पली बढी मैं।
सब से आसान हिन्दी हमारी,
हिन्दी हमारी भाषा है,
यह हमारी आशा है।
हिन्दी कितनी प्यारी है,
सब बच्चों को लगती न्यारी है।

रीया जैन, पाँच बी

ड्रामा फैस्टिवल 2013

हर साल की तरह इस बार भी मस्ती भरा ड्रामा फैस्टिवल आया। उसकी तैयारियॉं हम सबने मिलकर बहुत जोर शोर से शुरू की। उन तैयारियों के बीच में ना सिर्फ हमने अपने अंदर एक कलाकार की भावना को जगाया।

और इसके साथ - साथ हमने अपने आपको मस्ती भरे माहौल में कुछ सीखने का संकल्प लिया। इसके दौरान जो भी हम सबने सीखा और एक टीम की भावना से जो भी हमने शो बनाया। वह काबिले तारीफ रहा। इस बार हमारा ड्रामा फैस्टिवल का विषय था 'अब ड्रामा बंद करो'। जो पॉचवी कक्षा के विद्यार्थियों को ही मिलकर चुनना था। हमारे स्कूल से कक्षा **3** और **4** के बच्चे इन्टरल्यूड में भाग लेते हैं। कक्षा **5** में हमें एक बहुत ही अच्छा मौका नाटक में हिस्सा लेने को मिलता है। ड्रामा ऑडिशन्स - जिसमें कलाकारों को चुना जाता है। शुरू से अन्त तक हम बच्चों को नाटक को खुद ही निभाना होता है। जैसे एक माला के बनाने से पहले अच्छे फूलों को इकट्ठा करते हैं। फिर पिरोते हैं। और तब जाकर एक सुंदर माला बनती है। इसी प्रकार नाटक को भी संजोया जाता है। इस बार सारे **16** स्कूलों ने अलग - अलग नाटक प्रस्तुत किए। इसकी सबसे महत्वपूर्ण बात यह रहती है कि इसमें कोई भी प्रतिस्पर्धा नहीं होती है। इसे एक त्योहार के स्वरूप मनाया जाता है।

आयुषि नागपाल पाँच - बी

ड्रामा फैस्टिवल - मेरा अनुभव

इस वर्ष मैंने पहली बार अपने विद्यालय के नाटक समारोह में भाग लिया। इस वर्ष के समारोह का विषय था "अब तो ड्रामा बंद करो"। मैं समारोह में हिन्दी समूह गायन का हिस्सा थी। हमने तीनों दिन अलग - अलग गाने गाए जिसके लिए हमने दो महीने अभ्यास किया था। हर दिन पॉच अलग अलग स्कूल अपना नाटक प्रस्तुत करते थे। मुझे न्यू ईरा पब्लिक स्कूल का नाटक और मेरे दोस्तों का "सालसा" नृत्य सबसे अच्छा लगा। हर दिन हमें स्वादिष्ट चॉकलेट केक और नाश्ता मिलता था। मुझे इस फैस्टिवल में हिस्सा लेकर बहुत अच्छा लगा और मैं अभी से ही अगले साल के इस समारोह की प्रतीक्षा करने लगी हूँ। मेरा मन करता है कि यह फैस्टिवल एक सप्ताह तक चले और अगले वर्ष मैं नृत्य में हिस्सा लूँ।

अद्वैता सहगल तीन - बी

नाटक समारोह तथा साक्षात्कार (इंटरव्यू)

यहाँ अपका अनुभव कैसा रहा और दूसरे विद्यालय के छात्रों से बातचीत करना आपको कैसा लगा ?

टैगोर इंटरनेशनल - मान्या

मेरा अनुभव रोचक रहा। मंच पर जगह थी और ग्रीनरूम भी अच्छा था।

रायन इंटरनेशनल - सरीना

मेरा अनुभव मज़ेदार रहा। मुझे नाटक देखते एवं करते हुए खुशी हुई। मुझे बातचीत करते हुए मज़ा आया। मुझे खासकर आपसे बात करना अच्छा लगा।

आपको इस मंच पर नाटक करते हुए कैसा प्रतीत हुआ?

एयरफोर्स स्कूल - कीतना

पहले तो मैं डर गई थी पर नाटक करते हुए मेरा डर धीरे -धीरे गायब हो गया और मुझे मज़ा आने लगा।

आपने अपने अभिनय को एक साथ कैसे जोड़ा ?

टैगोर इंटरनेशनल - मान्या

पहले हमारी अध्यापिका ने बच्चों का चयन किया। फिर हमने नाटक का प्रतिदिन अभ्यास किया।

एयरफोर्स स्कूल - कीतना

पहले हमने बहुत नाटक देखे उनके बारे में बात की। अच्छे विचार से एक नाटक बनाया यह सोचते हुए कि चार्ली चैपलिन जैसे मज़किया व्यक्ति को अपने अभिनय में लेकर ज़्यादा मज़ा आएगा।

आपने इस कार्यक्रम से क्या सीखा ?

स्टैपबाई स्टैप - लावान्या

मैंने सीखा कि मंच पर नाटक करते हुए आत्मविश्वास जरूरी है।

श्रीराम स्कूल - तेजस

कॉम्पिटीशन के बिना ज्यादा मज़ा आता है।

एयरफोर्स स्कूल - ब्राइना

सबको ड्रामा आता है और कोई भी ड्रामा कर सकता है।

क्या आप कोई सुझाव देना चाहेंगे ?

स्टैपबाई स्टैप - लावान्या

सभी कुछ इतना अच्छा था कि मुझे कोई सुझाव देने की ज़रूरत ही नहीं है।

आपको अपना नाटक तैयार करने में कितना समय लगा ?

वसंत वैली - ज़ायरा

31 दिन में हमने अपना नाटक तैयार कर लिया।

निर्मल भारतीय स्कूल

एक से दो हफ्ते

साक्षात्कारकर्ता वेदिका वागला और शिव्या पॉल कक्षा पॉच

पंचतंत्र की कहानी "कछुआ और हंस" का चित्रांकन फाउंडेशन

'बडी रीडिंग' कक्षा तीन व नर्सरी

चुटकुले

1 टीचर : सच और वहम में क्या फर्क है
शिष्य : आप जो हमें पढ़ा रहे है सच है प हम सब पढ़ रहे हैं वह आपका वहम है ।
2 लोग कहते हैं कि खुदा ने आपको फुर्सत में बनाया है ।
ठीक ही कहते हैं फ़ालतू काम फुर्सत मे ही तो किए जाते है ।
3 टीचर छात्र को : 'तुम स्कूल लेट क्यों आए'
छात्र : 'सड़क पर एक आदमी का नोट गुम हो गया था' टीचर छात्र को : 'अच्छा तो तुम उसकी मदद कर रहे थे'।
छात्र : 'नहीं मैं वहाँ से उसके जाने का इंतज़ार कर रहा था। नोट मेरे पैरों के नीचे जो था।'

आकिब इर्फान प आदित राज 10

वर्ग पहेली

	1.(i) प		श्र					(viii) ह			ली
					3. (iii) अ		र				
(ii) स		2. न		(iv) अं					(vi) ना		
	ण					4. श					
8. अ								(vii) वि			ण
	7. वा		(v) स	6. मा		र	5. प				
श											

ऊपर से नीचे	दाएँ से बाएँ
1. नाप तौल का दूसरा नाम (4)	i) मेहनत करने वाला (4)
2. प्राचीन का विलोम (3)	ii) बराबर का अर्थ (3)
3. उपकार का विलोम (4)	iii) सुर का विलोम (3)
4. देह का पर्यायवाची (3)	iv) नभ का पर्यायवाची (3)
5. रखवाली के लिए दूसरा शब्द (5)	v) अखबार के लिए दूसरा शब्द (6)
6. माँ का तत्सम रूप (2)	vi) नर का स्त्रीलिंग (2)
7. दिन का प्रर्यायवाची (3)	vii) स्मरण का विलोम (4)
8. विकसित का विलोम (5)	viii) हरा दिखने का भाव (4)

ऊपर से नीचे -

परिमाण, नवीन, अपकार, शरीर, पहरेदारी, मातृ, वासर, अविकसित

दाएँ से बाँए -

परिश्रमी, समान, असुर, आकाश, समाचार पत्र, नारी, विस्मरण, हरियाली

कबीर सिंह

सप्ताह के अध्यापक

1 आप इतने वरिष्ठ अध्यापक हो कर भी सिर्फ जूनियर स्कूल में ही क्यों पढ़ाते है?
अगर नींव मज़बूत होगी तो ही इमरत बुलंद होगी।
जब मैंने 1990 में स्कूल में पढ़ाना शुरू किया तो सिर्फ जूनियर स्कूल ही था। 1992 में मैंने एन सी ई आर टी की वर्कशाप में भाग लिया था, जहाँ शिक्षण का विषय 'प्राथमिक विद्यालय' था। मैं 1992 से 2002 तक कमेटी का मैम्बर भी रहा हूँ

2 आपके पढ़ाने का अनोखा अंदाज़ कहाँ से आया?
असल में मेरे मामाजी बिहार में जूनियर स्कूल के मुख्याध्यापक थे। वे गणित के पहाड़े संगीत के माध्यम से सिखाते थे। मेरे नज़रिये में, अगर ज़िंदगी की शुरूआत में ही कठिन विषयों का सामना हो जाए तो आगे सफ़र मीठा ही होगा।

3 आप हर साल स्पॉर्टस डे पर बहुत जोश प उत्साह के साथ भाग लेते हैं। यह जोश आपको कहाँ से मिलता है?
मैं सिर्फ स्पॉर्टस डे में ही शामिल नहीं होता पर फाऊण्डर डे प एडवैन्चर कैम्प की तैयारी में भी उत्साहपूर्वक शामिल होता हूँ। मैं अपने कर्म को ही पूजा मानता हूँ तथा जिस प्रकार अन्य लोग छुट्टी ले कर बाहर जाते हैं, वैसे ही मैं इन कार्यों में व्यस्त रहकर आनन्द पाता हूँ।

हिन्दी हैं हम

संपादक समिति

जाहन्वी अर्विका नागपाल, काम्या शर्मा, काम्या यादव, रीया कोठारी, सरीना मित्तल, अनन्या गुप्ता, अरमान पुरी, नूर ढींगरा, ऋषभ चैटर्जी, सरीना नंदा, आकांक्षा जादव, अनन्या जैन, इन्द्रनील रॉय, रिद्धिमा वाही, तारिनी सरदेसाई, आस्था कामरा, आदित्या श्रीनिवासन, भरत सोमनाथन, पीया कोचर, शरन्या ठाकुर, वसुधा दीक्षित

मुख्य संपादक - नम्रता नरूला